दिनेश प्रताप सिंह चौहान

जन्मतिथि- 14.11.1954
जन्मस्थान - एटा,उत्तर प्रदेश
पिता का नाम- स्व०आनंद पाल सिंह चौहान
माता का नाम- स्व० रामा बाई चौहान
मोबाइल - 9719766035

गणपति का सबसे प्रथम,सभी सदा लें नाम।
मानव सारे जगत के,या हों देव तमाम।।
या हों देव तमाम,विघ्न वे हरते सबके।
जो ले उनको पूज,कष्ट सब मिटते उसके।
सब माँगें आशीष,मनुज ऋषि या हों सुरपति।
सध जाते सब काम,नाम यदि ले लें गणपति।।

****

मतलब के रिश्ते सभी,.इस कलयुग में आज।
स्वार्थपूर्ति में ही जुटा,अब यह सकल समाज।।
अब यह सकल समाज,.स्वार्थ का भाई चारा।
धन के पीछे दौड़,सिर्फ़ उद्देश्य हमारा।
प्रेम युक्त व्यवहार,नहीं दिखते हमको अब।
नहीं चाहिए प्रेम,सिर्फ़ धन से अब मतलब।।

****

अच्छा है बँट जाय दुख,किंतु खरीदे कौन।
सुनकर दुख की दर्द की,बात सभी हों मौन।।
बात सभी हों मौन,कौन बाँटे दुख जग में।
दुखी सभी इंसान,अकेले मिलते मग में।
दुख में माँगो साथ,दिखाते सभी अनिच्छा।
दुख जो यदि बँट पाय,बहुत ही मानें अच्छा।।

****

मेहनत माटी में मिली,हुआ तुषारापात।
बेमौसम ओले पड़े,बेमौसम बरसात।।
बेमौसम बरसात,किसानों में दुख भारी।
प्रकृति ले गई लूट,मेहनत उनकी सारी।
नित्य लड़े वह युद्ध,दिखाता हर दिन ताक़त।
लेकिन करती व्यर्थ,प्रकृति उनकी सब मेहनत।।

****

कर्ता तो करतार है,करे वही सब कृत्य।
और उसी की ताल पर,मानव करता नृत्य।।
मानव करता नृत्य,सदा कठपुतली जैसा।
जैसा चाहे ईश,नाचता है वह वैसा।
जाने क्यों इंसान,.अहम फिर मन में धरता।
बस निमित्त इंसान,ईश ही सब का कर्ता।।

****

दौलत मेहनत की भली,बाकी सब बेकार।
सभी शास्त्र हर संत यह,देते रहें विचार।।
देते रहें विचार,पाप की दौलत सारी।
करती है बर्बाद,कष्ट दे सकती भारी।
अपना वैदिक धर्म,सदा से रखता यह मत।
पापों की बेकार,सही मेहनत की दौलत।।

****

जिसकी जैसी साधना,जितना रहे प्रयास।
उसको उतना फल मिले,बात सदा यह खास।।
बात सदा यह खास, बढ़े जो निश्चय करके।
खुल जाते सब बंध,मुश्किलें रहतीं डर के।
कहें सदा से शास्त्र, मंजिलें होतीं उसकी।
जैसे रहें प्रयास,साधना जैसी जिसकी।।

****

फागुन फागुन मन हुआ, उड़ता बना पतंग।
हवा फगुनिया चल रही, जो मदमाए अंग।।
जो मदमाए अंग,दे रही दस्तक होली।
प्रकृति बिखेरे रंग,गंध ने खिड़की खोली।
यह फागुन का माह,सगुण को करता निर्गुण।
रंगों का त्यौहार, संग ले आया फागुन।।

****

जिसपर होता धन अधिक,समझ न उसे अमीर।
होता वही अमीर जो, समझे सब की पीर।।
समझे सब की पीर,दीन का बने सहारा।
और दिखे जब दीन,कष्ट से उसे उबारा।
उसे बड़ा मत जान,अगर धन ज्यादा उसपर।
बड़ा वही इंसान,बड़ा दिल होता जिसपर।।

****

होता केवल कर्म पर,मानव का अधिकार।
फल क्या होगा कर्म का, ईश हाथ सरकार।।
ईश हाथ सरकार, कर्म पर ध्यान दीजिए।
फल को रखकर ध्यान,कर्म मत कभी कीजिए।
अकर्मण्य बन मूर्ख, भला क्यों फिर तू सोता।
कर उसको स्वीकार, कर्म फल जो भी होता।।

****